E content of History, B.A. Hons. Part I, Paper I Hons. - भारत का इतिहास प्रारम्भ से 1906 ई० तक, Nalanda Open University.

— Prof. Poonam Choudhury
Chief Coordinator, History
N.O.U.

Q) Write an essay on the Cultural developments of the Gupta Period?
गुप्तकालीन सांस्कृतिक विकास पर एक निबन्ध लिखें।

Ans.)

प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्तकाल (लगभग चौथी शताब्दी से लेकर छठी शताब्दी ई० तक) को विशेष महत्व प्राप्त है। इस काल में न केवल एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया गया, बल्कि कला, संस्कृति, विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की गयी जिस कारण इस युग को भारतीय इतिहास में "स्वर्णिम युग" के नाम से जाना जाता है।

क) साहित्यिक उपलब्धियाँ:

गुप्तकाल में धार्मिक और धर्म-निरपेक्ष दोनों ही प्रकार के साहित्य की प्रगति हुई थी। हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म के विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना की। गुप्तकाल में संस्कृत राजभाषा हो गयी थी। इस कारण प्रायः सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे गये। रामायण और महाभारत का वर्तमान स्वरूप इसी समय तीसरी या चौथी सदी में बना। पुराणों की रचना गुप्तकाल से बहुत पहले आरम्भ हो गयी थी,

Scanned with CamScanner

पत्रांक ....

Page 2

परन्तु कई पुराणों का भी वर्तमान स्वरूप गुप्त काल में ही बना। विभिन्न स्मृतियों की रचना भी गुप्तकाल में हुई, जैसे, नारद-स्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति, बृहस्पति-स्मृति आदि। तमिल और प्राकृत भाषा में भी अनेक ग्रन्थ लिखे गये और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का अनुवाद इन भाषाओं में किया गया।

धर्मनिरपेक्ष साहित्य में भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई और इस काल में अनेक विख्यात विद्वान हुए। सुबन्धु द्वारा रचित 'वासवदत्ता', भट्टि का 'रावण वध', भारवि का 'किरातार्जुनीय' विशाखदत्त का 'मुद्राराक्षस', शूद्रक का 'मृच्छकटिकम' दण्डिन का 'दशकुमार-चरित्र' आदि इस समय की महान रचनाएँ मानी जाती हैं। इनके अतिरिक्त भर्तृहरि, दार्शनिक और कवि, इसी युग में हुआ। अमरसिंह जिसने 'अमरकोष' की रचना की, वात्सायन जिसने 'कामसूत्र' की रचना की भी इसी युग में हुये। विज्ञान, ज्योतिष, गणित आदि के अनेक विद्वान इस युग में हुए। कवि हरिषेण, जिसने समुद्रगुप्त के इलाहाबाद-स्तम्भ के अभिलेख की रचना की, इस युग के एक महान विद्वान थे। संस्कृत साहित्य में सबसे अधिक उल्लेखनीय नाम कालिदास का है। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें 'ऋतुसंहार', 'मेघदूत', 'कुमारसंभव', 'रघुवंश', 'मालविकाग्निमित्र', 'विक्रमोर्वशीय'

Scanned with CamScanner

पत्रांक ....

Page 3

और 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का स्थान प्रमुख माना गया है।

(ख) विज्ञान, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा-शास्त्र आदि में प्रगति: विज्ञान, गणित, ज्योतिष आदि के अनेक महान अन्वेषण विद्वान इस युग में हुए जो भारतीयों की शक्ति के प्रतीक सिद्ध हुए। आर्यभट्ट इस युग का महान वैज्ञानिक और गणिताचार्य माना गया। उसने यह बताया कि सूर्य नहीं अपितु पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, तथा ग्रहणों का कारण चन्द्र और सूर्य को राहु अथवा केतु के द्वारा ग्रसना नहीं अपितु पृथ्वी और चन्द्र की बदलती हुई स्थितियाँ हैं। उसने अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति में विभिन्न नवीन खोजें कीं। दशमलव प्रणाली का आविष्कार हिन्दुओं ने किया था। इसे किसने आरम्भ किया यह तो पता नहीं लगता, परन्तु आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने अपने ग्रंथों में इसका उल्लेख किया है।

आर्यभट्ट ने नक्षत्र, गणित, ज्योतिष आदि सभी क्षेत्रों में कार्य किया था। उनकी मुख्य रचना आर्यभट्ट के नाम से विख्यात हुई। भास्कर प्रथम ने आर्यभट्ट के सिद्धांतों पर टीकाएँ लिखीं और अन्य स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे। उनमें महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य और भाष्य प्रमुख हैं। आर्यभट्ट के कार्य को निःशंक, पाण्डुरंग, लाटदेव ने ज्योतिष में आगे बढ़ाया

और वराहमिहिर ने उसे श्रेष्ठतम बना दिया। वराहमिहिर अपने युग के महान ज्योतिषी हुए। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें वृहत्संहिता, सबसे अधिक प्रसिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा लिखे गये पंच-सिद्धान्तिक, वृहज्जातक और लघुजातक ग्रन्थ भी प्रसिद्ध हुए। ब्रह्मपुत्र इस काल के एक अन्य महानज्योतिषाचार्य थे।

इसके अतिरिक्त धातु-विज्ञान, शिल्प-ज्ञान आदि की भी उन्नति हुई। दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट मेहरौली का लौह-स्तंभ उस समय के धातु-विज्ञान का अद्भुत नमूना है। उसे किस प्रकार बनाया गया होगा और अभी तक खुले स्थान पर होते हुए भी उसका चिकना रहना और उसमें जंग न लगना आश्चर्य का विषय है। इस प्रकार, गुप्तकाल शिक्षा, साहित्य विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में ज्ञान की अद्भुत प्रगति और नवीन अन्वेषणों का काल था।

ग) कला एवं स्थापत्य की स्थापना:

कला — विभिन्न कलाओं की दृष्टि से गुप्तकाल में अद्वितीय उन्नति हुई। गुप्त सम्राटों द्वारा चलाये गये सिक्के, गुफाएँ और गुफा-चित्र, मन्दिरों और भवनों के अवशेष तथा अधिकांशतया पत्थर अथवा पकी हुई मिट्टी की विभिन्न मूर्तियाँ गुप्तकाल की कला

पत्रांक .... दिनांक ....

Page 5

को जानने के साधन हैं। यह सभी मिलकर यह सिद्ध करते हैं कि गुप्तकाल में भारतीयों ने कलात्मक और सृजन - शक्ति का पूर्ण विकास किया था।

चित्रकला - गुप्तकाल की चित्रकला के नमूने अजन्ता और ग्वालियर की बाघ - गुफाओं में प्राप्त हुए हैं। अजन्ता के भित्ति (दीवार के) चित्रों में 16 और 17 नं. गुफा के चित्र गुप्त युगीन माने जाते हैं। 16 नं. गुफा के चित्र में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रमुख है। 17 नं. गुफा के चित्रों में माता और पुत्र, संभवतया यशोधरा और राहुल का चित्र प्रमुख है। ये चित्र अति सुन्दर चित्र माने जाते हैं। इनमें मनुष्य के भावों को जिस प्रकार प्रदर्शित किया गया है, वह अद्वितीय है। अजन्ता के चित्रों में बुद्ध और बोधिसत्वों के चित्र, जातक कथाओं के वर्णनात्मक दृश्य, पुष्प, वृक्ष, पशु - पक्षी देवी - देवता, यक्ष, गन्धर्व आदि अंकित किये गये हैं। वे सभी इतने सजीव और भावमय हैं कि उनको संसार के श्रेष्ठतम चित्रों में स्थान दिया गया है।

बाघ - गुफाओं के चित्र भी अजन्ता के चित्रों के समान ही सुन्दर माने गये हैं। ग्वालियर के निकट बाघ गाँव की नौ गुफाओं में चौथी और पाँचवी गुफा के चित्र अत्यधिक सुन्दर माने जाते हैं। इनमें एक चित्र नृत्य - संगीत का है जिसमें अनेक स्त्रियां और एक पुरुष को गाना गाते हुए दर्शाया गया है। दूसरे चित्र में कुछ पुरुष घोड़ा सवारी करते

Scanned with CamScanner

हुए दिखलाये गये हैं। बाघ की गुफाओं के ये चित्र प्रायः एक ही समय में बनाये गये। उनका आधार भी धार्मिक न होकर लौकिक जीवन है। इस कारण उनकी अपनी पृथक् विशेषता है। उनके शारीरिक सौन्दर्य और स्त्री-पुरुषों के भावों को व्यक्त करने का जो प्रयत्न किया गया है, वह अद्वितीय है। विभिन्न विद्वानों ने बाघ के चित्रों की अत्यधिक प्रशंसा की है। मार्शल ने लिखा है कि "यद्यपि बाघ के चित्र लौकिक जीवन से लिये गये हैं, परन्तु वे उन अव्यक्त भावों को भी स्पष्ट करते हैं जिनको प्रकट करना उच्च चित्रकला का लक्ष्य है।"

मूर्तिकला —

मूर्तिकला की दृष्टि से गुप्तकाल का एक विशेष स्थान है। बहुत समय तक यह माना जाता रहा था कि भारतीय मूर्ति-कला में गान्धार-शैली का स्थान प्रमुख था और उसने भारत की सभी मूर्तिकला शैलियों को प्रभावित किया। गान्धार-शैली पर यूनानी शैली के प्रभाव को भी स्वीकार किया गया था और इस प्रकार यह धारणा भी रही थी कि भारतीय मूर्तिकला के विकास में विदेशी प्रभाव मुख्य रहा, परन्तु अब यह धारणा समाप्त हो चुकी है। मथुरा और अमरावती मूर्तिकला शैली का जन्म स्वतंत्र रूप से माना गया है, परन्तु तब भी मथुरा शैली पर गान्धार शैली अथवा यूनान से व्यापारिक सम्बन्धों के कारण प्रत्यक्ष

Scanned with CamScanner

पत्रांक ....

Page 7

रूप से यूनानी - शैली प्रभाव को स्वीकार किया गया है। इसके विपरीत, गुप्त - मूर्तिकला शैली इन सभी विदेशी प्रभावों से पूर्णतया मुक्त मानी जाती है। यह गुप्तकाल तक मथुरा-शैली विदेशी प्रभाव से पूर्णतया मुक्त हो चुकी थी। इस कारण गुप्तकाल में जिस मूर्तिकला शैली का विकास हुआ वह विदेशी प्रभाव से पूर्णतया मुक्त मानी जाती है।

गुप्तकाल में मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र मूर्तिकला के विकास के मुख्य केन्द्र-स्थान रहे। विभिन्न स्थानों पर प्राप्त बौद्ध और हिन्दू देवताओं की मूर्तियों को सुरक्षित रखा गया है। बौद्ध - प्रतिमाओं में महात्मा बुद्ध की तीन प्रतिमाएँ प्रमुख हैं। बिहार के सुल्तानगंज में ताम्बे की 2.25 मीटर ऊँची खड़े हुए बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई थी जो अब बरमिंघम के आजायबघर में सुरक्षित है। इसमें बुद्ध का दाहिना हाथ अभय मुद्रा में उठा हुआ है। बुद्ध की दूसरी पाषाण - प्रतिमा मथुरा में प्राप्त हुई। यह मूर्ति भी खड़े हुए बुद्ध की है और उनके चेहरे के चारों ओर एक प्रभामण्डल दिखाया गया है। बुद्ध की तीसरी पाषाण प्रतिमा सारनाथ में प्राप्त हुई। इसमें बुद्ध पद्मासन लगाये हुए बैठे हैं। इसमें भी बुद्ध के चेहरे के चारों ओर प्रभामण्डल दिखाया गया

है। इनके अतिरिक्त भी बुद्ध और बोधिसत्वों की विभिन्न मूर्तियों में बुद्ध को वस्त्र पहिने हुये दिखाया गया है। उनके केश घुंघराले दिखाये गये हैं और मुख्यतया उनके चेहरे पर शान्ति, करुणा, प्रेम और आध्यात्मिक भाव भावना को सफलता से दिखाया गया है।

हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां भी अनेक स्थानों पर प्राप्त हुई हैं। इनमें शिव और विष्णु की मूर्तियों का प्रमुख स्थान है। एक-मुखी शिव, चतुर्मुखी शिव और अर्द्धनारीश्वर शिव की मूर्तियां गुप्तकाल की अपनी पृथक विशेषताएँ हैं। देवगढ़ (झांसी जिला) के दशावतार मन्दिर में शिव की कई कलात्मक आकृतियां हैं। यहीं पर शेषनाग की शैय्या पर लेटे हुए विष्णु की मूर्ति अत्यंत सुन्दर है। इसमें विष्णु की नाभि कमल पर ब्रह्मा को, चरणों में लक्ष्मी देवी को और आकाश में शिव, पार्वती, कार्तिकेय, इन्द्र आदि देवताओं को दिखाया गया है। डा० वी० एस० अग्रवाल ने लिखा है, "गजेन्द्रमोक्ष, अनन्त पर लेटे हुए विष्णु और हिमालय में निवास करते हुए नर तथा नारायण जिन्हें देवगढ़ के मन्दिर में मूर्ति में ढाला गया है, हिन्दू मूर्तिकला के श्रेष्ठ नमूना में स्थान रखते हैं।"

भरतपुर के निकट रूपवास नामक स्थान पर चार विशाल मूर्तियां हैं। इनमें से एक विष्णु

की मूर्ति २.७० मीटर से अधिक और दूसरा कृष्ण के भाई बलराम की मूर्ति ।। मीटर से भी अधिक ऊँची है। मध्यप्रदेश में भिलसा के निकट उदयगिरि में विष्णु के वराह की मूर्ति अति सुन्दर है। इसमें वराह-अवतार में विष्णु अपने दाँतों से पृथ्वी को उठाये हुए हुए हैं। इसके निकट ही गंगा और यमुना के जन्म, प्रयाग में संगम और उनके सागर में विलीन होने के दो अ-साधारण दृश्य बनाये गये हैं। उदयगिरी के निकट पथारी में कृष्ण के जन्म को मूर्ति द्वारा दिखाया गया है। काशी के निकट प्राप्त और सारनाथ के अजायबघर में सुरक्षित कृष्ण की एक मूर्ति है जिसमें कृष्ण गोवर्धन पर्वत को उठाये हुए हैं। काशी के कला-भवन में सुरक्षित मोर पर बैठे हुए कार्तिकेय की मूर्ति, कौशाम्बी (इलाहाबाद) में प्राप्त सूर्य की मूर्ति भी बहुत सुन्दर मानी गयी है। मथुरा और गोरखपुर जिले में महावीर स्वामी और अन्य जैन तीर्थंकरों की कुछ मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्मों के देवताओं की मूर्तियाँ विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हुई हैं और सुरक्षित हैं। ये मूर्तियाँ सिद्ध करती हैं कि गुप्तकालीन शिल्पकला अद्वितीय थी।

गुप्तकाल की धार्मिक मूर्तियाँ नैतिकता की प्रतीक थी। उनमें शारीरिक सौन्दर्य को दिखाया गया था, परन्तु उसे वस्त्रों से ढक दिया गया था तथा उसमें आध्यात्मिक भावना को श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया था। भारतीयों ने आरम्भ में विदेशी से कुछ भी सीखा हो, परन्तु इस समय तक वे स्वयं अपनी पृथक कला का निर्माण करने में सफल हुए। भारतीय मूर्तिकला इस समय में सीखने की नहीं, अपितु अन्यों को सिखाने की स्थिति में थी। मि. हैवेल ने

Scanned with CamScanner

पृष्ठांक .... दिनांक ....

Page 10

लिखा है "भारत उस समय ऋण लेते रहने की स्थिति में न था, अपितु सम्पूर्ण एशिया का गुरु था और उसने पाश्चात्य विचारों को अपनी विचारधारा में बदल डालने के लिए ही उन्हें उधार लिया था।"
गुप्तकाल मे मूर्तिकला श्रेष्ठतम स्थिति में पहुँच गयी थी और यह एक स्वाभाविक तथा गतिशील क्रिया का परिणाम था। डॉ० कुमार स्वामी ने लिखा है "गुप्तकालीन कला एवं पूर्ण स्वाभाविक क्रमिक कला (क्रमिक) विकास की पराकाष्ठा का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त गुप्त-मूर्तिकला ने भारत में ही श्रेष्ठ स्थान प्राप्त नहीं किया अपितु सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वी एशिया की कला को भी गम्भीरता से प्रभावित किया जहाँ इस युग में भारतीय संस्कृति का प्रसार हो चुका था।"

Scanned with CamScanner